चारों युगों का तुलनात्मक वर्णन
एवं
समभाव आधारित संविधान

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	संकलन	पृष्ठ संख्या
1	चारों युगों का तुलनात्मक वर्णन	02
2	सतयुग	04
3	त्रेता युग	08
4	द्वापर युग	12
5	कलियुग	19
6	समभाव आधारित संविधान	53

युग आते हैं युग जाते हैं,

पर समयकाल कहाँ रुकता है।

यह तो चलते-चलते हुए भी इक

नए युग को रचता है।।

चार युग- सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग।

चारों युगों का तुलनात्मक वर्णन

पुराणों के अनुसार जगत युगान्तरों के निरंतर चक्र से गुज़रता रहता है। हिन्दू खगोल व पौराणिक विद्या के अनुसार प्रत्येक 43,20,000 (तैंतालीस लाख बीस हज़ार) वर्षों के बाद इस संसार का पुनः सृजन होता है। ब्रह्माण्ड के सृजन और विनाश की यह क्रिया ठीक काल-चक्र में होने वाले ऋतुओं के परिर्वतन की भाँति ही बनती और बिगड़ती रहती है। ग्रीष्म, वर्षा, शरद् शीत, हेमन्त व बसंत ऋतुओं की भाँति ही प्रत्येक युग में धीरे-धीरे जटिल क्रमिक परिर्वतन होते हैं जिससे प्रभावित होकर पृथ्वी व प्रत्येक प्राणी की अंतर्चेतना को सम्पूर्णतया पूर्वनिर्धारित प्रक्रिया से गुज़रना पड़ता है। काल-चक्र के स्वर्णिम प्रकाशमय युग से अंधकारमय युग तक तथा पुनः अंधकारमय युग से सुनहरी युग तक पहुँचने के अन्तराल में हुए परिवर्तन का मुख्य कारण सूर्य (केन्द्र-बिन्दु) के इर्द-गिर्द हमारे सौरमण्डल की गति में हुए परिवर्तन होते हैं।

समय चक्र का आरोह क्रम अर्थात् कलियुग से सतयुग तक के समय का अनुगमन समान अंतर से अवरोह क्रम में यानि सतयुग से कलियुग तक के चक्र द्वारा किया जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि निश्चित अवधि के पश्चात् युग बदलते रहते हैं तथा युगों के अवरोह क्रम की गति का अनुगमन

आरोह क्रम करता है। इसीलिए सतयुग से त्रेता, त्रेता से द्वापर, द्वापर से कलियुग तथा कलियुग के पश्चात सतयुग आना सुनिश्चित होता है।

इस प्रकार युग एक दूसरे का अविरत अनुगमन करते हैं। सतयुग से कलियुग तक के अवरोहण में (ढलते क्रम में) धर्म की निरंतर अवनति होती है। परिणामस्वरूप मानवीय आयु तथा नैतिक स्तर का निरतंर ह्रास होता है। सतयुग के अंत में श्रेष्ठता, परिशुद्धता एवं पूर्णता का अधोपतन आरम्भ होने पर त्रेता युग आरम्भ हो जाता है। इसी संदर्भ में त्रेता में हुई अवनति से द्वापर युग व द्वापर युग में हुए पतन से अंतिम अंधकारमय कलियुग आ जाता है जो कि दुष्टता, पाप व अत्याचार का युग होता है। यहाँ तक कि मनुष्य-मनुष्य को मार डालता है। इस प्रकार क्रमशः सतयुगी नैतिकता का पतन हो जाता है और वह अधोगति को प्राप्त होती है। कहा जाता है कि कलियुग के अंतिम चरण में एक दिव्य तत्व के अस्तित्व में आने से धर्म की पुनर्स्थापना होती है और इस प्रकार पुनः सतयुग आता है।

आओ अब चारों युगों के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा जानें कि सतयुग की नैतिकता व आचार-संहिता का किस प्रकार क्रमिक ह्रास यानि नैतिक पतन होता है-

सतयुग

पुराण अनुसार इस युग का आरम्भ वैशाख शुक्ला तृतीया रविवार को माना गया है। इस युग में पुण्य के चार पाद होते हैं इसलिए यह युग सबसे उत्तम माना जाता है। इस युग में पुण्य और सत्यता की अधिकता रहती है इसलिए सभी सच्चरित्र व धर्मात्मा होते हैं।

अन्य प्रचलित नाम	:	कृतयुग, देवयुग, धर्मयुग और स्वर्णयुग।
युग-अवधि	:	4800 दिव्य वर्ष।
मानव वर्ष के अनुसार युग आयु	:	17,28,000 वर्ष।
युग का क्रम	:	सतयुग (प्रथम सार्थक युग)।
मानव की औसतन आयु	:	एक लाख वर्ष या इससे अधिक।
ईश्वर तथा मानवीय सम्बन्ध	:	एकता-एकरसता युक्त।
जीवन-यापन की प्रणाली का आधार	:	परमार्थ।